

सूरह जासियह - 45



सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 37 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 28 में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात् घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।
- इस की आयत 7 से 15 तक में अल्लाह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत 16 से 20 तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया। और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत 21 से 35 में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।

حَمْدٌ

2. इस पुस्तक^[1] का उतरना अल्लाह,
सब चीजों और गुणों को जानने वाले
की ओर से है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

1 इस सूरह में भी तौहीद तथा परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।
4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला⁽¹⁾ दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।
5. तथा रात और दिन के आने- जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।
6. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहें हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?
7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये।
8. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही

إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبْدَتْ مِنْ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْقِنُونَ ۝

وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

بَلَىٰ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ۝

وَلِلَّهِ كُلُّ آفَاءٍ أُثْمِرُ ۝

يَسْمَعُ آيَاتُ اللَّهِ تَنْقُلُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ يُصَوِّرُ لَهُمْ كَانَ لَهُمْ يَسْمَعُهَا قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَيْهَا وَإِنَّهُمْ بِهَا لَكَاظِمُونَ ۝

- 1 तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में कुर्आन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अल्लाह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूलों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आत्मिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात् ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

न हो! तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।

9. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही हैं जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
10. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।
11. यह (क़ुर्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़ किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दुःखदायी यातना।
12. अल्लाह ही ने बश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।
13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच-विचार करें।
14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर^[1] दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

مِنْ دَرَأَوْهُمْ جَهَنَّمَ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْسُهُمْ أَشْيَاءُ وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آوِيًا وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

هَٰذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجِزٍ آخِرٍ ۝

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرِيَ الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُ وَالَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

1 अर्थात् उन की ओर से जो दुःख पहुँचता है।

दिनों^[1] की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे^[2] जाओगे।

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
لَهُ إِلَىٰ رَبِّكَ رُجُوعٌ ۝

16. तथा हम ने प्रदान की इस्राईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الْغُلْبَةِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान^[3] आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।

وَاتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِمَّنْ بَعْدَ
مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ
يُقْضَىٰ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ۝

18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चलें उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِّعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह

إِنَّهُمْ لَن يَغْنُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ

1 अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यातनायें दी हैं। (देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 5)

2 अर्थात् प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।

3 अर्थात् वैध तथा अवैध, और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

अत्याचारी एक-दूसरे के मित्र हैं। और
अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है।

20. यह (कुआन) सूझ की बातें हैं सब
मनुष्यों के लिये तथा मार्ग दर्शन एवं
दया है उन के लिये जो विश्वास करें।

21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म
किया है कि हम कर देंगे उन को
उन के समान जो ईमान लाये तथा
सदाचार किये हैं कि उन का जीवन
तथा मरण समान^[1] हो जाये? वह
बुरा निर्णय कर रहे हैं।

22. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों
एवं धरती को न्याय के साथ और
ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी
को उस के कर्म का तथा उन पर
अत्याचार नहीं किया जायेगा।

23. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना
लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को।
तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे
जानते हुये, और मुहर लगा दी उस
के कान तथा दिल पर, और बना
दिया उस की आँख पर आवरण
(पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह
दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात्? तो
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही
संसारिक जीवन है। हम यहीं मरते
और जीते हैं। और हमारा विनाश युग
(काल) ही करता है। उन्हें इस का
कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝

هَذَا ابْصَارُ النَّاسِ وَهَدَىٰ ذُرِّيَّةً لِّقَوْمٍ
يُؤْتُونَ ۝

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ
كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَعَهُمْ
وَمِمَّا أَنَّهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِيُخْرِجَ
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ
وَجَعَلَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقْفًا فَنَصَرَّتْ عَلَىٰ بَصَرِهِ ۚ عَنَّا
ثُمَّ يَعْبُدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا
وَمَا يَهْدِي لَنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ
عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝

1 अर्थात् दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

बात^[1] कर रहे हैं।

25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।
26. आप कह दें: अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग (इस तथ्य को) नहीं^[2] जानते।
27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।
28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म-पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।
29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।
30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार

وَإِذَا نُتِلَ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بِحُجَّتٍ مَّا كَانُ حُجَّتَهُمْ
إِلَّا أَنْ قَالُوا اتَّبُوا آبَاءَنَا إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يَوْمَ يَفْعَلُ الْمُبِطُونَ ۝

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى إِلَى كِتَابِهَا
الْيَوْمَ تُحْجَرُونَ مَآ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

هَذَا كِتَابُنَا يُنْفِثُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنْ كُنَّا
نَسْنِسُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ

- 1 हदीस में है कि अल्लाह फरमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग मैं हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में हैं। (सहीह बुखारी: 6181) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होता है उसे अल्लाह ही करता है।
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने संसार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

31. परन्तु जिन्होंने कुफ़ किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थी? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे।
32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।
33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।
34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे¹ जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।
35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें

رَأَيْتُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُتَّبِعِينَ ۝

وَبَدَأَ اللَّهُ سَيِّئَاتِكَ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ۝

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِفُكُمْ كَمَا نَسِفْنَا لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا وَمَا لَكُمْ التَّارُومَ لَكُمْ مِنْ نُصِيرِينَ ۝

ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ أَخَذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَعَظَمْتُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا

1 जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैं ने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे आधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगा: हाँ ये सहीह है, हे मेरे पालनहार! फिर अल्लाह उस से प्रश्न करेगा: क्या तुम्हें मुझ से मिलने का विश्वास था? वह कहेगा: "नहीं।" अल्लाह फरमायेगा: (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा। (सहीह मुस्लिम: 2968)

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٠﴾

संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।^[1]

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

قَبْلَهُ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥١﴾

37. और उसी की महिमा^[2] है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

وَلَهُ الْكِبَرُ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِالدُّخَانِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

2 अर्थात् महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कुद्सी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो मैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिम: 2620)